BA(H) Part -I, Paper -II

Dr. Gautam kumar
Guest Teacher
Department of Political Science,
A.N.D College, Shahpur Patory, Sam

तिलक के सामाजिक विचार
(Social Views of Tilak)

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के राजनीतिक विचारों की तरह सामाजिक विचार भी महत्वपूर्ण हैं। वह समाज-सुधार आंदोलन के अग्रदूत थे। इस दृष्टि से समाज सुधार के विभिन्न पक्षों पर उनका एक निश्चित विचार था। तिलक हिंदू समाज में व्याप्त रुढियों और कुरीतियों से भली-भांति परिचित थे तथा अन्य समाज सुधारकों के समान ही उन्होंने सुधारों के माध्यम से उनसे मुक्त करने हेतु प्रयत्न किया। इस दृष्टि से उन्होंने बाल विवाह विरोध, विधवा उद्धार एवं विधवा विवाह समर्थन, नारी शिक्षा पर बल, अस्पृश्यता का निवारण तथा दलितोंद्धार का समर्थन किया एवं मद्य निषेध पर जोर दिया। डीएम सैनी ने कहा कि " तिलक समाज-सुधारों के नहीं अपितु समाज सुधारों के प्रयत्न में ब्रिटिश हस्तक्षेप और उनके नाम पर भारतीय मूल्यों की अपेक्षा पश्चिमी जीवन मूल्यों को भारतीय समाज में आरोपित किए जाने के विरुद्ध थे।" तिलक के सामाजिक विचार के पक्ष निम्न प्रकार हैं : -

1. **सामाजिक सुधारों की अपेक्षा राजनीतिक लक्ष्य की प्राप्ति की प्राथमिकता** :-
तिलक सामाजिक सुधारों के पक्षधर थे लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के लिए राजनीतिक लक्ष्य/सत्ता को आवश्यक समझते थे। बाल गंगाधर तिलक की मान्यता थी कि पहले हमें राजनीतिक सत्ता अर्जित करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि राजनीतिक सत्ता अर्जित करने के बाद हमारे लिए सामाजिक सुधारों के लक्ष्य को प्राप्त करना आसान हो जायेगा। अतः उनके अनुसार सामाजिक सुधारों को उचित स्वरूप देने हेतु राजनीतिक सत्ता अर्थात "स्वराज” की प्राप्ति एक अनिवार्य शर्त थी। तिलक का मानना था कि राजनीतिक सत्ता अर्थात् "स्वराज्य प्राप्ति" को प्राप्त करके ही हम समाज सुधारों के कार्यों को बिना ब्रिटिश हस्तक्षेप के भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार संपन्न कर सकते हैं। समाज सुधार की दृष्टि से वे ब्रिटिश शासकों के हस्तक्षेप के विरुद्ध थे। वे इसे भारतीय विषय मानते थे और चाहते थे कि यह सिर्फ भारतीयों द्वारा ही संपन्न

किया जाना चाहिए। वे किसी भी सूरत में विदेशी शासकों को भारतीयों के सामाजिक तथा धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप का अधिकार के पक्ष में नहीं थे।

2. समाज सुधार हेतु शासन-शक्ति के बजाय जन-जागृति पर बल - तिलक का मानना था कि सामाजिक सुधार शासन शक्ति के माध्यम से निर्मित विधि से नहीं किया जा सकता। विधि निर्माण के माध्यम से किए गए सुधार स्वाभाविक होने के स्थान पर कृत्रिम होंगे और उनका चरित्र समाज पर बाहर से थोपे गए सुधारों के समान होगा। तिलक का विचार था कि समाज सुधार का कार्य ससमय और व्यक्तियों के मन की भावनाओं में परिवर्तन करके ही किया जा सकता है। समाज सुधार थोपे नहीं जा सकते। यह तो शिक्षा की प्रक्रिया के आधार पर धीरे-धीरे ही संभव है। उनका विचार था कि सामाजिक जीवन के प्रसंग में जो भी जन भावना है उसका आदर किया जाना चाहिए और धीरे-धीरे ही परिवर्तन की कोई चेष्टा की जानी चाहिए।

3. समाज सुधार कार्य में ब्रिटिश शासन और विदेशी नौकरशाही के हस्तक्षेप का विरोध - 19वीं सदी में सामाजिक जीवन में सुधार हेतु हिंदू समाज सुधार आंदोलन के विरुद्ध नहीं थे। इस कार्य में तिलक ने सरकार से आग्रह एवं सरकार को सहायता भी की। लेकिन समाज सुधार के संबंध में तिलक का दृष्टिकोण भिन्न था। उनका कहना था कि यदि ब्रिटिश शासन और नौकरशाही को सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करने दिया जाए तो इससे ब्रिटिश शासन की शक्ति का प्रसार होगा। तिलक को यह बात आपत्तिजनक लगती थी कि हिंदू लोग नौकरशाही के समक्ष जाकर उसे समाज सुधार कानून बनाने की याचना करें। याचक प्रवृत्ति से राज्य की नैतिक तथा बौद्धिक नींव कमजोर होगी। तिलक बाल विवाह के विरुद्ध थे किंतु यह नहीं चाहते थे कि बाल विवाह को बंद करने के लिए विदेशी नौकरशाही कानून बनाएं। तिलक समाज सुधार के लिए आवश्यक कानून निर्माण के विरुद्ध नहीं थे, वे तो विदेशी शासन द्वारा इस क्षेत्र में हस्तक्षेप और कानून निर्माण के विरुद्ध थे। यदि देश स्वतंत्र होता और जनप्रतिनिधियों की सरकार होती तो इस संबंध में उनका दृष्टिकोण निश्चित रूप से दूसरा होता।

4. समाज सुधारों के माध्यम से पश्चिमीकरण का विरोध - तिलक समाज सुधारों की आड़ में पश्चिमी मूल्यों के अनुसार भारतीय समाज के पश्चिमीकरण के विरुद्ध थे। वे भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों तथा विकृतियों से परिचित थे तथा उसके उन्मूलन की आवश्यकता महसूस करते थे। इस दृष्टि से उनकी यह मान्यता थी कि

इसके लिए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का उन्मूलन ही नहीं वरन् इसके अनुसरण की आवश्यकता है। संपूर्ण सामाजिक सुधारों का ताना-बाना भारतीय संस्कृति की परिधि में किया जाना चाहिए। इस हेतु उसके स्थान पर पश्चिमी संस्कृति को अपनाकर उसके अनुसार किए जाने वाले सामाजिक सुधार न तो स्वाभाविक सुधार होंगे और न वांछनीय होकर समाज को बेहतर करेंगे। समाज से भारतीय संस्कृति और समाज की शुद्धता और मौलिकता खोकर वर्ग-संकर समाज और संस्कृति के रूप में परिवर्तित हो जाएगा जो कि उसके लिए एक अपूरणीय क्षति के रूप में होगी। इस प्रकार भारतीय समाज का सुधारों के माध्यम से पश्चिमीकरण करके उसका हित नहीं अपितु अहित ही करेंगे, क्योंकि सामाजिक सुधारों के लिए सांस्कृतिक परिवर्तन का नहीं वरन् समाज में व्याप्त कुरीतियों, विकृतियों के शुद्धि का है और यह शुद्धीकरण का सुधारवादी आंदोलन अनिवार्य रूप से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार ही संचालित और संपन्न किया जाना चाहिए। तिलक की मान्यता थी कि यदि भारत को पश्चिमी आधारों पर डालने का प्रयत्न किया गया तो इसका सीधा अर्थ उसकी महानता को तहस-नहस करना होगा। ऐसा सामाजिक सुधार अवांछित और अनैतिक होगा। इसे अपनाकर हम एक न्यायनिष्ठ और लोक कल्याणकारी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करने में कदापि समर्थ नहीं होंगे, जिसे कि हम सामाजिक सुधारों के माध्यम से स्थापित करना चाहते हैं।

5. **<u>कथनी-करनी में समानता के पक्षधर</u>** - सामाजिक सुधार की दृष्टि से तिलक के समय में अधिकांश समाज सुधारक, सुधारों के सिद्धांत का समर्थन तो करते थे लेकिन उसका अपने व्यावहारिक जीवन में अनुसरण नहीं करते थे। उनकी कथनी और करनी में काफी अंतर होता था लेकिन तिलक इसके अपवाद थे। तिलक जो कहते थे, उसका अपने जीवन में अनुसरण करते थे। ऐसे आचरणहीन समाज सुधारकों की टोली को "शेखचिल्लीयों की जमात" कह कर उसका मजाक उड़ाया करते थे। इस दृष्टि से उनकी मान्यता थी कि "उपदेश के एक टन से व्यवहार का एक औंस अच्छा है।"